



राष्ट्रीय एवं राज्य-स्तरीय
शिक्षक पुरस्कार
1975

शिक्षण विभाग, राज्यपाल
दोहावेर

राष्ट्रीय एवं राज्य-स्तरीय
शिक्षक पुरस्कार
1975

शिक्षा विभाग, राजस्थान
बीकानेर

राष्ट्रीय एवं राज्य-स्तरीय
शिक्षक पुरस्कार
1975

शिक्षा विभाग, राज्यपाल
बोर्ड

राष्ट्रपति

सार दण के लिखाको की बगई तथा मुम-कामगारों देवे हुए मुझे बनी

क्याम हाता है । आचार्य ही दुहा गीड़ी के सब म मृधुभावाण गेहा
ही दगाता है । अब आचार्यका का अब । तुमरहागिण का मममरा
अब हीर मवा की आचर्य से उन गुहा कउन का प्रयाग करना आदिग ।
इसी के कपय की मममरा कादिग हीर उविन मममरा व इन्ही गुहा

आ म मरी दह हर्दह कनिन है कि व मममरा लिखर कादगा
न दे ।

अबमदीन अभी अममरा

- - -

2

प्रधानमंत्री

शिक्षक हमारे समाज के सम्मानित सदस्य हैं। वे विद्या-दान करते हैं और युवा-मानस को गढ़ने हैं, इसलिए वे आदर और श्रद्धा के पात्र हैं। छात्र का समाज बटुन पेचीदा बन गया है और इस वजह से उनका कार्य भी ज्यादा मुश्किल और महत्वपूर्ण हो गया है। लेकिन अन्य पेशे के लोगों की तरह अध्यापकों को भी समय की माँग के अनुसार चलना चाहिए। अध्यापन की गढ़नियों में सुधार करना होगा। अध्यापक और विद्यार्थी के बीच घले घाते परम्परागत सम्बन्धों को फिर से मजबूत बनाना होगा। इस तरह का पुनः सामंजस्य यद्यपि आसान नहीं, लेकिन उम्मेद बचा नहीं जा सकता।

एक स्वस्थ शैक्षिक मरचमा, किसी भी नये समाज की बुनियाद होती है। हो सकता है कि कुछ वालों में हमारी कुछ कमियाँ रही हों, किन्तु फिर भी हमने महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। छात्र हमें यह आशा होने लगी है कि हम देश के सभी बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था कर सकेंगे। यह हमारी मूल आकांक्षाओं में से एक है और अध्यापकों के निष्ठापूर्ण प्रयास से ही इसे पूरा किया जा सकता है।

देश में हाल की घटनाओं ने हमें अपने मूल आदर्शों के प्रति फिर से एक बार समर्पित होने के लिए प्रेरित किया है और हमारे लिए यह जरूरी है। अन्य सभी वर्गों को भी अपने-अपने कार्य में, जो उन्हें मिला जाता है, नये उन्माद में जुट जाना चाहिए। पहले की अपेक्षा हमारे बहुत कम ज्यादा अच्छा काम कर रहे हैं। अन्य राष्ट्रीय गतिविधियों को तरह-तराहों में भी अनुशासन और लगन की एक नई भावना दिखाई दे रही है। हमें इसकी बजाय रमना चाहिए ताकि देश प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहे।

इन्दिरा गांधी

राष्ट्र स्तरीय पुरस्कार
1975

श्री हेमाराम शर्मा,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय जाजोदिया उच्च माध्यमिक विद्यालय,
मुजानगढ़ (चूरु)



आयु 52 वर्ष, सेवा 32 वर्ष

तीन दशकों से भी अधिक समय तक निष्ठावान अध्यापक के रूप में सेवाएँ देने वाले श्री हेमाराम शर्मा प्राथमिक एवं प्रशासनिक क्षेत्रों में अग्रणी रहे हैं। आपके अनथक प्रयासों में विद्यालय में शिक्षा का स्तर उन्नत हुआ तथा परीक्षा परिणाम उल्लेखनीय रहे।

प्रधानाध्यापक के नाते शाला के दैनंदिन कार्यों का कुशलतापूर्वक संचालन करते हुए भी श्री शर्मा ब्रह्मा-शिक्षण में निरन्तर मग्न रहते हैं तथा शिक्षण की आधुनिक विधियों के प्रयोग द्वारा सहकर्मियों अध्यापकों को मार्गदर्शन देते रहे हैं।

आप मितभाषी हैं तथा स्वभाव में मृदु भी। छात्रों में जितने लोकप्रिय हैं उतने ही स्थानीय समाज में भी। आपके प्रभाव से शाला को दो लाख रुपये की जमीन दान में मिली तथा 70,000 रुपये की लागत में भवन-निर्माण कराया गया। अन्य बचत में भी आपकी प्रेरणा से छात्रों ने पचास हजार रुपये जमा कराए।

शिक्षा सम्बन्धी अनेक शीघ्र-गतिरो एवं कार्यशाखाओं में श्री शर्मा का सम्भावित रत्न है तथा जन-जगणना जैसे राष्ट्रीय सेवा-कार्य में उन्हें पुरस्कृत किया गया है। बालचर मस्या के आप जिना समिन्तर हैं तथा प्रधानाध्यापक वाकरीठ के सचिव।

स्व० श्री हरकचन्द्र,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय न० १,
छापर (बूट)

आयु 51 वर्ष, सेवा 29 वर्ष



शैक्षिक योग्यता में मिडिल पास होने हुए भी स्व० श्री हरकचन्द्र ने प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षण में अपूर्व प्रशंसा अर्जित की। पाठ-योजना बनाने, दस्तावेज के लिए महापत्र-सामग्री स्वयं तैयार करने और इन प्रकार रोचक ढंग से बालकों के समक्ष पाठ प्रस्तुत करने में आपका सदैव विश्वास रहा। आपके विद्यालय में अविभक्त दस्तावेज-योजना का संचालन काफी-तुच्छ वैज्ञानिक विधि में सम्पन्न होता रहा।

25 वर्षों तक आप एक ही विद्यालय में सेवाएँ देते रहे। अतः एक घोर शैक्षिक समुन्नयन के लिए आपने प्रशमनीय कार्य किया तो दूसरी ओर ज्ञान के भौतिक विकास में भी कोर-जगर नहीं छोड़ी। अपने व्यक्तिगत प्रयत्नों में आपने ज्ञाना-भवन के लिए 35,000 रुपये जन-सहयोग में प्राप्त किए और आवश्यकता की सारी वस्तुएँ ज्ञाना में जुटाईं।

'स्कूल चलो अभियान' में श्री आपने विशेष रचि लेकर छात्र-संख्या में असीम वृद्धि की। समुदाय में आपका विशेष सम्मान रहा तथा आपके स्कूल का विशेष स्थान। दिनांक 13-8-75 को आपका आधिकारिक निधन हो गया।

श्री चमनलाल,
महापक अध्यापक,
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय,
दीनपुरा (श्रीगंगानगर)



आयु 54 वर्ष, सेवा 41 वर्ष

छोटी बच्चाओं के बच्चों को प्यार में पढ़ाने की कला में निपुण श्री चमनलाल बपोबुद्ध एवं ज्ञानबुद्ध होने के कारण अपने क्षेत्र में सर्वाधिक सम्मानित शिक्षक हैं।

41 वर्ष के सुदीर्घ अध्यापन-काल में अपने नियमितवार्षिक बच्चों की तथा पूरी लैंगी एवं निरुद्ध के गाय शिक्षण कार्य किया। अपनी निरुद्धी शिक्षण-शैली के कारण आज भी ये बच्चों में लोकप्रिय हैं। अभिभावकों एवं सहयोगी अध्यापकों से अपने सम्बन्ध बड़े मधुर हैं। समाज-व्यवस्था के कार्यों में आप मईव बच्चुबुद्ध भाग लेते रहे हैं। 'मूल्य चलो अभियान' तथा विद्यालय-निर्माण में आपका योगदान विशेषतया उल्लेखनीय है।

आप आदर्श अध्यापक हैं। अपने कर्तव्य का पालन अपने बड़ी धुन में किया है। अपने व्यक्तित्व में बच्चे प्रेरणा ग्रहण करने रहे हैं।

श्री त्रिलोकचन्द तिवारी,
महायक अध्यापक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बारी (बोटा)
आयु 54 वर्ष, सेवा 32 वर्ष



निष्ठावान, मेलाभावी एवं समर्पित शिक्षक के रूप में श्री तिवारी के व्यक्तित्व की राश पहने में ही आपने धेय में व्याप्त है।

विषय-शिक्षण के रूप में आप छात्रों के माथ पूरी मेहनत करने रहे हैं, विविध शिक्षण-विधियों के प्रयोग द्वारा विषय-वस्तु का उन्हें सम्यक् रीति में ज्ञान देने रहे हैं। आपने परीक्षा-प्रणालि में सर्व प्रणमनीय रहे।

कृत्रवाल एवं हाकी के आप अच्छे खिलाडी हैं तथा छात्रों को नियमित रूप में कोचिंग देने हैं। समुचित कार्यक्रमों में भी आपकी सहगी रही रही है।

समाज-सेवा में आपका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। 1967 की बाढ़ में लोगों को बचाने का आपने अद्भुत कार्य किया था। गुरुदा-रोप में धन जुटाने, क्षेत्र-घाउट के समय गहरेदारी करने तथा जल-सहयोग द्वारा न्यायवशात्त की प्रयोगशाला बनवाने में आपकी नेतृत्वं भूतर्क नहीं जा सकती। सहमील एवं जिला स्तर पर आप सम्मानित विग जा चुके हैं।

श्रीमती एच विनिगटन,
सहायक छायाचित्रिका
राष्ट्रीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
नेहरू स्टेडियम, जयपुर
आयु ५२ वर्ष तथा २५ वर्ष



कमलवतिगटन एच परिश्रमी छायाचित्रिका के रूप में आसानी से पहचाने जा सकते हैं। वे ज्ञान के प्रति तथा छात्रों के प्रति समान ही उत्साह रखती हैं। वे छात्रों के अनुशासन, छात्रविकास तथा श्रम के प्रति विशेष ध्यान देती हैं।

साहित्य प्रवृत्तियों में छात्रों को बलिष्ठ प्रेरणा देने का प्रयत्न करती हैं। १९५९ में अपने साहित्यिक कार्य के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित हो चुकी हैं। कुछ ही वर्षों में वे छात्रों के लिए बहुत सारे लेख लिख चुकी हैं। वे छात्रों के लिए बहुत सारे लेख लिख चुकी हैं। वे छात्रों के लिए बहुत सारे लेख लिख चुकी हैं।

एक छायाचित्रिका तथा एक साहित्यिक कार्य में उन्होंने बहुत सारे लेख लिखे हैं।

श्रीमती एच. विलिंगटन,
 महासच: अध्यापिका,
 राजकीय उच्च प्राथमिक शाला,
 रेनवे स्टेशन, जयपुर
 आयु 52 वर्ष, सेवा 25 वर्ष



कर्मस्थानिष्ठ एवं पन्ध्रवीं अध्यापिका के रूप में श्रीमती विलिंगटन का कार्य सर्वप्रथम राष्ट्रीय रहा है। वे शाला के प्रति तथा छात्राओं के प्रति लगन में कार्य करती रही हैं तथा छात्राओं में अनुशासन, आत्मविश्वास तथा श्रम के प्रति निष्ठा के भाव भरती रही हैं।

सांस्कृतिक प्रवृत्तियों में छात्रों का विशेष रुचान प्रकटित हुआ है। 1955 में प्राप्त राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड छात्रोत्सव में सम्मेलित हैं। बुनबुन एवं सांस्कृतिक में छात्रों का उत्साह बृद्ध होकर प्राप्त किया है तथा पिछले 18-19 वर्षों में जयपुर में हिन्दुस्तान फोर सीडर के रूप में उत्कृष्ट निरन्तर सेवाएँ दे रही हैं।

एक अध्यापिका तथा एक गाइड के रूप में छात्रों के कार्य अनुकरणीय हैं।

श्रीमती गुलाबदेवी शर्मा,
प्रधानाध्यापिका
राजकीय बालिका प्राथमिक विद्यालय
देवरी (रां.)



आप पिछले 27 वर्षों में हमी विद्यालय में प्राध्यापिका तथा बाद में मुख्यालय में कार्य कर रही हैं। आप एक धार्मिक सेवा में (बर्गो की प्रशिक्षण की जिम्मेदार रही हैं) हैं। एक धार्मिक शिक्षण कार्य का गणतन्त्रात्मक संस्थापन करने में आप संलग्न रही हैं। आप दूसरी धार्मिक शिक्षण कार्य में भी संलग्नता में रही हैं।

ਘੋਸ਼ਿਤ-ਪ੍ਰਕਾਸ਼-ਨਿਰਾਸ਼ਾ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਵਲੋਂ ਖੁਸ਼ ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ
 ਹੋਣਾ, ਜਿਸ-ਸ਼ਕਤੀ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ
 ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ
 ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ

आप कटुनागन सिद्ध हैं। उनका व शरीर व दृष्टि कटुनाग से आकरा है। उनका व निश्चय प्रतीति है।

श्री दयाराम गुप्ता,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय,
बृम्हागनद पार्क, ब्यावर (अजमेर)
आयु 45 वर्ष, सेवा 24 वर्ष



श्री दयाराम गुप्ता ने प्राथमिक छात्राओं में ही काम करने-करते विज्ञान, भाषा व गणित विषयों के शिक्षण हेतु छात्रों उपयोगी उपकरण निर्मित किए तथा उनके प्रभावशाली प्रयोग द्वारा छात्रों को साक्षात्कृत किया। उपकरणों का निर्माण शिक्षा-क्षेत्र में छात्रों की उत्प्रेरणा है।

शैक्षिक कार्यक्रमों तथा शिक्षकों में भाग लेकर नये शैक्षिक विचारों में अग्रगण्य होने तथा छात्रों की प्रतिभा में नये-नये शैक्षिक प्रयोग करने में छात्र सदैव अग्रणी रहे हैं।

शैक्षिक मूल के धनी श्री गुप्ता की प्रतिभा का परिचय शिक्षण के क्षेत्र में ही मिलता रहा है। बचि, बालाचार, गणित, आदि एवं रचनात्मक कार्यक्रमों के जाने भी छात्र जन-समाज में सम्मानित हैं।

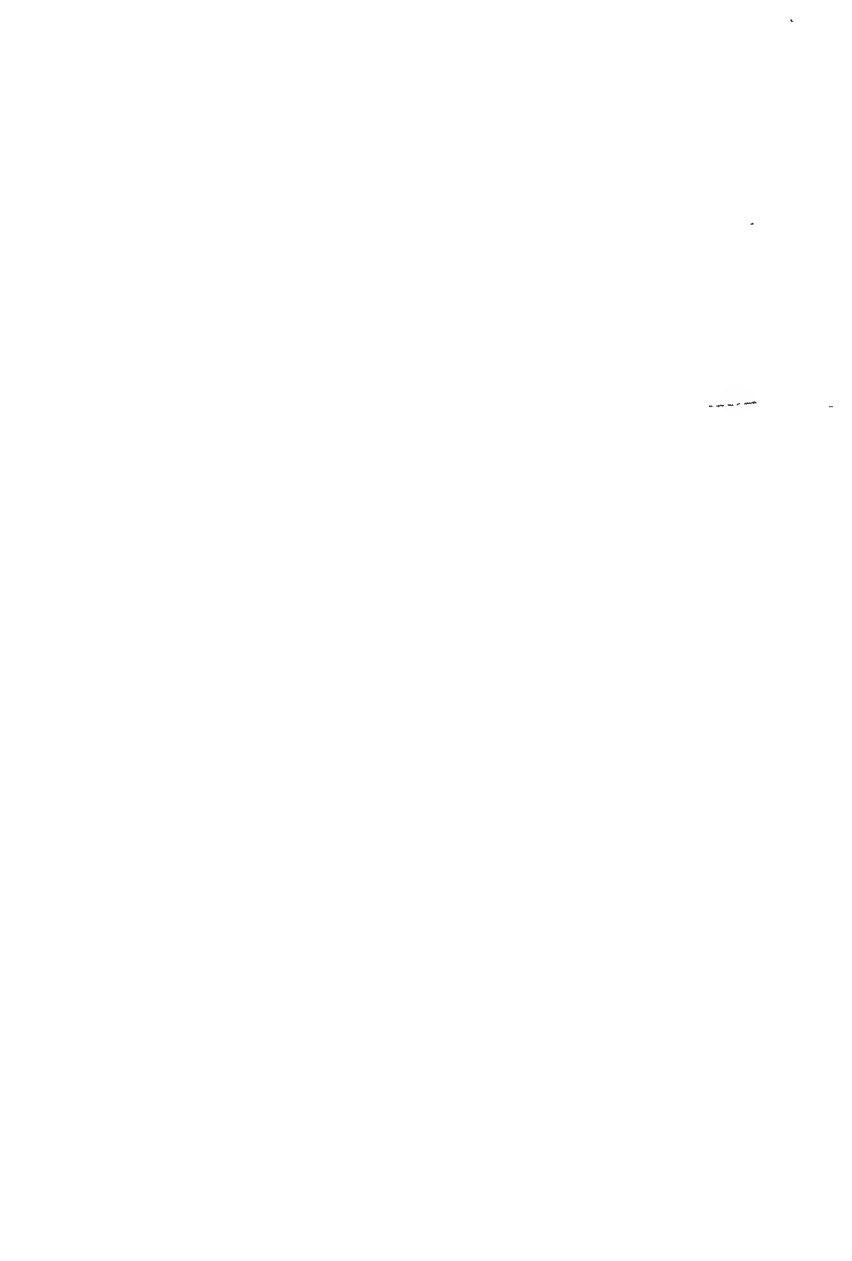
श्री धनसिंह,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय,
मुन्दरपुरा, (प० म० तानेडा) बूंदी
आयु 37 वर्ष, सेवा 16 वर्ष



आनवरत श्रम से विद्यालय की शैक्षिक व भौतिक समृद्धि के लिए लगे रहने वाले श्री धनसिंह स्वैच्छिक रूप से शिक्षा-वर्षों में सलगन एक समर्पित अध्यापक है।

अब तक के सेवाकाल में आप गिछटी जन-जातियों के समुदाय में शिक्षा प्रसार के लिए त्रिवार्षिक रहे हैं। तानेडा पंचायत समिति में आप पहले व्यक्ति हैं जो पहाड़ी क्षेत्र में बसने वाले भीलों को माध्यम बनाने का मकल्प लेकर चले और अपने अभियान में सफल रहे।

विद्यालय के कुशल संचालन, राष्ट्रीय स्तरों में हिस्सेदारी तथा समुदाय के साथ सहभागितापूर्ण व्यवहार के लिए आप प्रशंसा के पात्र हैं। जिला स्तर पर भी आप पुरस्कार व सम्मानित किए जा चुके हैं।



श्री इन्द्रमणि त्रिपाठी,

प्रधानाध्यापक,

राजकीय प्राथमिक विद्यालय,

कलिवजरी द्वार, शाहपुरा (भीमवाड़ा)

आयु 51 वर्ष सेवा 31 वर्ष



खेल पद्धति में अविभक्त-उत्तराई शिक्षण की संज्ञक व प्रभावी बनाने वाले श्री त्रिपाठी पूर्ण निष्ठा के साथ बच्चों को पढ़ाते हैं तथा नियमित रूप में उनके शैक्षणिक कार्य की जाँच करते हैं।

बच्चे आपसे सौम्य स्वभाव तथा आकर्षक व्यक्तित्व में प्रभावित हैं तथा आपसे हर क्षण की पूर्ण वरने के लिए तत्पर रहते हैं। महयोगी अध्यापक भी आपसे प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

विद्यालय में स्वच्छता तथा अनुशासन का सुन्दर वातावरण रखना आपकी धार्मिक विवेचना नहीं जा सकती है। सामाजिक अभियान में भी आपका योगदान प्रशंसा के योग्य रहता है। आपने आकर्षक व्यक्तित्व द्वारा जनसहयोग में विद्यालय-भवन बनवाने तथा छात्रावास व्यवस्था बनवाने में भी आपकी सेवाएँ उल्लेखनीय रही हैं।

श्री बंगोमिह चौहान,
प्रधानाचार्य
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
चौहान चौक बाराक (ब्रह्मपुर)
पृष्ठ 49 वरग मरग 24 वरग

[illegible][illegible]

सायन अनुशासन-प्रिय है, लक्ष्मी का सम्मान विचार समान है और दुःख (अथ दारिद्र्य) प्रशान्त का अनुशासन करने है।

[illegible]

श्री बीरबल शर्मा,
प्रधानाध्यापक,
बाल मन्दिर,
गिलानी (भुवनेश्वर)



आयु 54 वर्ष, सेवा 37 वर्ष

खेल ही खेल में बच्चों को शिक्षा देने के उद्देश्य से त्रिभुवन बाल मन्दिर में श्री बीरबल शर्मा एक सौन-साधक की भूमिति विगत 37 वर्षों में साधनागत रहे हैं। बच्चों के बीच बच्चा बनकर उतरने गरी दिशा की धोर ले जाने, उनमें प्रच्छेद सरकार भरने तथा रोबक डग में उग्न गडाने में धारा प्रचुर म्याति प्रजित की है। बच्चों का निश्छल विश्वास, प्रतिभाशरी की धडा तथा समाज का सम्मान धापने धनवरत रूप में बसाया है।

धारा राष्ट्रीय व साम्प्रतिक कार्यो में भी रवि लेने है तथा धर्म के प्रति निष्ठा का भाव बच्चों में प्रेश करने है।

प्रधानाध्यापक के लम्बे धनुभवों में समृद्ध धापका स्कूल धनेक बारोपयोगी प्रवृत्तियों का बेग्न है तथा नगर में उसका बिशिष्ट स्थान बन गया है।



श्री कल्याणसहाम मिश्र,
प्रधानाध्यापक
राजस्थानीय उच्च प्राथमिक विद्यालय,
रजौटेसी, जयपुर



आयु 53 वर्ष सेवा 29 वर्ष

एक अध्यापक अपनी रचनात्मक क्षमता, बुद्धि-बल एवं लगन के द्वारा एक नयी अनन्त विद्याया या
बैने कायाकल्प कर सकता है इसका एकान्त उदाहरण है - श्री कल्याणसहाम मिश्र ।

एक तरफ आपने मैट्रिक में एम० ए०, बी० एड० तथा निरन्तर अपनी व्यावसायिक प्रगति का लक्ष्य
रखी तो दूसरी ओर अनेक उच्च प्राथमिक शाखाया की मौखिक प्रगति के अनिमान मान्यता प्राप्त ।
जिन-जिन विद्यालयो में आप रहे, वहाँ-वहाँ एक साथ अनेक प्रवर्तियों बर्तों, प्राधान्यार्थ प्राप्त म गी
गई और छात्रों व अध्यापकों में एक अभूतपूर्व उत्साह देया गया । विद्यालयों में नई जान धा गई ।

आप राष्ट्रीय भावनाओं के पोषक तथा निस्वार्थ सेवाभावी अध्यापक है । ध्वजों का विद्यालय आपकी
त्यागपूर्ण सेवाओं की वजहों भी विस्मृत नहीं कर सकता ।

आप सर्वगुणसम्पन्न आदर्श शिक्षक है, कुशल संचालक तथा अक्षर लेखक है । राज्य शिक्षा मन्शन
द्वारा आपका लेख प्रथम पुरस्कृत हुआ था । अत्यन्त-वचन में छात्रों और अध्यापकों के मन प्रविष्ट म गी
सोचने हेतु आपकी स्तूति को पाँच हजार रूपों का प्रथम पुरस्कार भी मिल चुका है ।

श्रीमती सरला सबसेना,
प्रधानाध्यापिका,
राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय,
वाटिका (जयपुर)
आयु 42 वर्ष, सेवा 24 वर्ष



विषय-शिक्षण में परिश्रम से अध्यापन कार्य करने तथा अल्पे परिणाम देने हेतु श्रीमती सरला सरसेना
अनेक प्रशंसा-पत्र प्राप्त कर चुकी है।

आप 'यथा नाम तथा गुण' है। सहयोगियों और स्थानीय समाज में आपने मनु व्यवहार के कारण
सम्मानित हैं। पिछले कई वर्षों में आप उच्च प्राथमिक विद्यालयों में प्रधानाध्यापिका के रूप में कार्य
कर चुकी हैं तथा आपने नेतृत्व एवं कुशल-संचालन के गुणों का परिचय दे चुकी हैं।

अध्यापक-अभिभावक सघ का गठन व नियन्त्रण, मेनहूद-प्रतियोगिताएँ, साहित्य व सांस्कृतिक
आयोजनों में भी आपने सहवर्ण्य भूमिका भरी है।

आपकी कार्य-श्रमाली रोचक है तथा विद्यालय की स्वच्छता व सज्जा में आप विशेष रूप से
सिनी हैं।



श्री मनोहरलाल सोमानी,

वसिष्ठ-प्रत्यापक

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

घागीर (भीलवाड़ा)

आयु 49 वर्ष, सेवा 25 वर्ष



11

गु आपने सेवाकाल में निरन्तर 90 प्रतिशत परीक्षा-परिणाम सन्तुष्टि का श्रेष्ठ कमाने वाले भी सामान्य अध्ययन-प्रिय तथा अपने विषय के महत्वपूर्ण शिक्षक के रूप में चिन्तित हैं। आपका ध्यान प्रभावशाली है तथा स्वेच्छा से नये-नये प्रोजेक्ट लेकर छात्रों का साक्षात्कार करने हैं।

भूगोल विषय के आप ज्ञाता हैं तथा एक विद्यार्थी की भाँति नये-नये ज्ञान को प्राप्त करने में उत्सुक रहते हैं। भूगोल संबंधी समस्याओं में तो भाग लेते ही हैं, जिज्ञासुता के साथ-साथ ज्ञान-व्यापकता तथा मेहनती भी लक्ष्य रहे हैं।

विद्यालय के शैक्षिक बालावस्था को एक स्तर तक पहुँचाने में आपने प्रयत्न सदा प्रयत्नशील रहें हैं। रचनात्मक कार्यों के माध्यम से छात्रों में उत्साह उत्पन्न है तथा आपने नृणात्मकता का कारण आप छात्र-वर्ग में लोकप्रिय हैं।

श्री भेरूबहाल चूरा,
वरिष्ठ-अध्यापक,
राजकीय मातृन उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बीकानेर

वयस्य 45 वर्ष, सेवा 20 वर्ष



एक दृष्टि-सम्पन्न शिक्षक आपनी प्रतिभा एवं व्यापक व्यवहार द्वारा छात्रों, अध्यापकों व समुदाय का चितना चहेता बन सकता है, इसका एक जीवन्त प्रमाण है श्री भेरूबहाल चूरा।

शिक्षण और शिक्षणार्थ दोनों दिशाओं में आपने समान गति से उन्मेषणीय सेवाएँ दी हैं। विषय-शिक्षक के नाते आप अद्वितीय हैं। उत्तम पाठ-योजना, विविध विधियों का प्रयोग, स्विचर मराठवा पाठ्य-सामग्री, छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान आदि के निरन्तर व्यवहार का ही फल है कि आपने छात्र न केवल सत-प्रतिष्ठान उमीर्ण होते हैं बल्कि बोर्ड में सर्वोत्तम स्थान पाते हैं।

वाणिज्य विषय के आप विद्वान हैं तथा तर्क में तर्क जानकारी के लिए उत्सुक रहते हैं। 'वाणिज्य में सूक्ष्म एवं मनुष्य' विषय पर आपने सर्व-रिपोर्ट तैयार की है। अब तक अनेक मण्डलियों एवं कार्यपालिकाओं में आप से चुने हैं।

स्वातंत्र्य व समाज-सेवा में आपका विशेष रुझान है। स्वातंत्र्य के नाते अनेक मित्रों में आप से चुने हैं तथा धेरु बायो के लिए प्रस्ताव-पत्र प्राप्त कर चुके हैं। बीकानेर में 'ग्रोइ शिक्षण समिति' तथा शिक्षा-विभाग के समस्त प्रदाओं में जो साक्षरता-प्रसार अभियान चलाया गया था, आपने चार वर्ष तक उसमें सुपरवाइजर का कार्य भी किया है।

श्री भैरवग वृग,
वर्ग, पत्र
राजकीय मातृ उच्च माध्यमिक विद्यालय
श्रीवर्ग
आय ५५ वग वग २० वग

[illegible]

श्रीमती पूर्णिमा पंडित,
वरिष्ठ अध्यापिका,
राजकीय महारानी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
श्रीकांगेर

आयु 45 वर्ष, सेवा 26 वर्ष



संज्ञित के क्षेत्र में श्रीमती पूर्णिमा पंडित एक स्थापित एवं बहुभूत नाम है। सन् 1944 में आप छात्राश्रवाणी की स्थापना है। कठ-समीप में जितनी विपुल है, विविध वाद्य-यंत्रों में भी उतनी ही प्रवीण है। शास्त्रीय एवं लोकनृत्यों में आप समान रूप में प्राग्गत हैं।

एक स्थापित की हैमियन में स्वयं सा लेना सामान होता है, पर धारणी धर्मनियत शैली में दूसरा को तैयार करना और विशेषकर छोटी-छोटी बालिकाओं को निगाना सामान काम नहीं है। पर धन्युक्ति नहीं होगी यदि कहा जाए कि श्रीमती पंडित एक कुशल संगीत शिक्षिका हैं। धारके परीक्षा-परिणाम सर्वत्र उत्कृष्टपरीय रहे हैं।

भारत के राज्यों की सांस्कृतिक अरिणी धारके मान्य में है तथा बालिकाओं के माध्यम में आप उन्हें सभी मंच पर तो सभी विस्तीर्ण हवन पर प्रस्तुत करने वाली हैं। विद्युते धनतत्र दिवस पर 300 बालिकाओं का स्टैंडिषम में सांस्कृतिक नृत्य कीर्तनेर के दर्शन सभी नहीं भूत।

श्रीमती पंडित संगीत की सांस्कृतिक बर्बादों में भी निरन्तर भाग लेती रहती हैं। संगीत भारती की गरीबियों तथा राजस्वत संगीत नाटक समारोहों की कार्यक्रमों में आपका योगदान उत्कृष्टपरीय रहा है।

श्री इयामस्वरूप अग्रवाल,
वरिष्ठ प्राचार्य
राजकीय केंवरपदा उच्च माध्यमिक विद्यालय
उडुमपुर
आयु 44 वर्ष सेवा 25 वर्ष



तत्त्वों के सर्वांगीण विकास के प्रावर्धनी विद्यालयी मतिविधियाँ क समझने तथा समझने के साथ साथ
श्री इयामस्वरूप अग्रवाल अपने विषय के विद्वान हैं तथा अपने व्यापक ज्ञान पर प्रमुखतापूर्वक
प्रशामक के रूप में सुपरिचित हैं।
पारी दर्बार्ज के रूप में आप विद्यालय की हर मति-विधि का स्वतः मर्म समझते हैं तथा नई नई
प्रायोजनाओं का संचालन करने हेतु कुतूहलवान रहते हैं।
आप परिश्रमी शिक्षक हैं तथा छात्रों के मानसिक स्वस्थ की विशेषता का अनुभव शिक्षण का सफल
फलन व्यवस्था का ध्यान रखते हैं। शिक्षण के दौरान विविध विधियों का प्रयोग करते हैं आप
निष्पत्ति हैं। जन-प्रतिष्ठान परीक्षा परीक्षात्मक स्तर के कारण शिक्षा विभाग पर छात्रों का प्रभाव एवं
प्रदान किया जा चुका है।
सामाजिक कार्यों में भी आपका योगदान उत्कृष्टतम है। स्थापित मनीष दुर्गा का शिक्षण समिति
नगर की प्रमुख गठवाओं के आप विभाग 11 बनों में संविष्ट हैं।
शिक्षा मन्त्री विषयों पर आपने हुए विद्वत प्रश्न लेख जिसे डे ऑफ द मन्त्री 'A Critical Study
of Factors of Job Satisfaction of Secondary School Teachers' विद्वत पर 78 87
रहते हैं।

श्री जसवन्तसिंह पगारिया,
वरिष्ठ सचिव
राजरीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
वंदी

आयु 43 वर्ष, गेवा 26 वर्ष

कई प्रकार की तकनीकों के प्रयोग द्वारा अपने कक्षा शिक्षण को समृद्ध बनाया जा रहा है। शिक्षकों के मासिक सम्मेलन में प्रतिदिन तयार रहने वाले श्री पद्माग्रिहा बड़े ही परिश्रमों से पाठ्यक्रम के अध्ययन के माते जाते हैं। वक्तों में छात्रों के विवेक स्तेज है तथा कक्षा के छात्रों से कम बोल पाठ्यक्रम व गणों को उनकी सुविधानुसार प्रतिस्ति समय में पढ़ाते हैं। इसी तरीके से पाठ्यक्रम पूर्णतः म भी उनके साथ व्यवस्त रहते हैं, उन्हें प्रेरित व प्रोत्साहित करने हैं। इस कार्य करने के कारण वे सम्मानित हुए हैं।

आपके विशिष्ट गुणों एवं सेवाओं को ध्यान में रखते हुए 1972 के 88वें संसदीय वर्ष के 18.1.72 में आपको पुरस्कृत किया था।

श्री कुशलराज मेहता,
वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय,
मानवा महान, रोटा
आयु 42 वर्ष, सेवा 22 वर्ष



नये शिक्षक प्रयोगों में अग्रणी श्री कुशलराज मेहता अपने शिक्षण-योगदान के लिए असीम प्रतिबद्धता से चुके हैं। गणित-शिक्षण को रोचक व मूल्यवर्धित बनाने की दिशा में आपका ध्यान गहरा सा है। कक्षा-शिक्षण की मॉनीटर बढ़ति आप छात्रों में छांटती हैं जो कक्षा में उभरती हैं व प्रगति कर चुके हैं।

नैदानिक-प्रयोग प्रोजेक्ट, मूल्यांकन-विधियों तथा उपपरी-निष्ठा में भी आप प्रतिबद्ध हैं तथा आवश्यकतानुसार अन्य विद्यालयों में मार्गदर्शन हेतु आमंत्रित किए जाते हैं।

मानव-विज्ञान एवं गणित, अनुसंधान संयोजकों, नैदानिक प्रशिक्षण एवं उपपरीक्षा निष्ठा में अभिन्न-धन्यता, मूल्यांकन तथा माहौल संबंधी धनक वापस आया, निष्ठा तथा मार्गदर्शक में आपने भाग लिया है तथा अपनी प्रतिभा का प्रत्येक क्षण पर ध्यान दिया है।

विज्ञान में आप द्वारा निर्देशित माहौल राज्य-स्तर पर पुष्कट रूप से है। शिक्षण पर आपका दो बार विशेष सेवाओं तथा उत्तम विषयाध्ययन के रूप में पुष्कट दिया जा चुका है। आपका विशेष प्रयत्न में रोटा स्थित महात्मा गांधी उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक के रूप में 20,000 रुपये की लागत का भौतिक-विज्ञान प्रयोगशाला-कक्ष बनवाया गया था। शिक्षण के लिए भी आपने 15,000 रुपये का जन-अर्थोपार्जन किया।

श्री लीवाराम,
वरिष्ठ अध्यापक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
नूपा (भुझुनु)

आयु 42 वर्ष, सेवा 23 वर्ष



गोष्ठं परीक्षा में जन-प्रतिजन परिणाम देने वाले श्री लीवाराम विद्यालय की हर शैक्षिक गति-विधि में मग्न रहते हैं। शिक्षानुसंधान, ज्ञान-प्रशामन, सह-भाष्य प्रवृत्तियाँ, गैलरूट, समाज-सेवा आदि तेजस्वी बायों में आप समान गति एवं उत्साह से लगे रहते हैं। इसी सारी प्रवृत्तियों में अपना कुशल बनाए रखते हुए सलग रहना और प्रत्येक काम की पूरी कुशलता के साथ सम्पादन करना आपके व्यक्तित्व का विशिष्ट गुण है।

श्रम-शिक्षक के रूप में आप छात्रों में, शिक्षण क्षेत्र बायों में लगे रहने के कारण समाज में तथा शैक्षिक संस्थाओं, अनुसंधान एवं सुपरविजन में विशेष रुझान के कारण पधितारियों में सम्मानित हैं।

जला-नदीय शिक्षानुसंधान कार्यक्रम के आप मग्न हैं तथा अनुसंधान सम्बन्धी प्रायोगिकताओं का सुपरविजन कर रहे हैं। आप पुटबल के श्रेष्ठ खिलाड़ी हैं तथा गैलरूट प्रतियोगिताओं का कुशलतापूर्वक सम्पादन करते हैं।

सुश्री यशोदा रानी लक्ष्मणा,
 प्रधानाध्यापिका
 राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय,
 भवानीमठ (भालावाड़)
 आयु 46 वर्ष, सेवा 22 वर्ष



सुश्री यशोदा रानी श्रेष्ठ अध्यापिका, कुशल प्रशामिका तथा वयस्क-हृदया है। मनुज धारण विषय विषय है, अतः आप ग्रन्थों तथा अमर काव्यों के अध्ययन में आपकी गहरी रुचि है।

आपका शिक्षण प्रभावशाली है तथा परीक्षा-परिणाम उत्तम रहे हैं।

प्रधानाध्यापिका के नाते छात्राओं की पठनाभिरुचि के विकास पुस्तकालयों-रचना मण्डल कार्यनुभव, नैतिक-शिक्षा, आंतरिक-सूक्ष्मांकन, अल्प-वचन एवं मानवीय कार्यों व गुणवत्ता आयोजन में आप लगी रहती हैं। बालिकाओं से ही नहीं, सहयोगी अध्यापिका तथा स्थानीय समाज से भी आपके संबंध घुट्टे हैं।

संतुष्ट प्रतियोगिताओं का उत्तम रीति में आयोजन करना आपकी अनिवार्य विशेषता है।

श्री यशवंतसिंह भण्डारी,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
मीगला (उदयपुर)

आयु 51 वर्ष, सेवा 29 वर्ष



॥ गोल-गिधक के रूप में ख्याति-प्राप्त श्री भण्डारी एक उत्साही प्रधानाध्यापक भी हैं ।

अनेकानेक शिक्षण विधियों के प्रयोग द्वारा अपने अध्यापन को यथार्थ और प्रारणवान बनाना, नई-नई पद्धतियाँ पढ़ना तथा विषयाध्यापकों से खर्चा-परिचर्चा करना आपका स्वाभाविक गुण है ।

प्रधानाध्यापक के रूप में विगत 13 वर्षों का आपका कार्यकाल अनेक शैक्षिक एवं मह-शैक्षिक प्रवृत्तियों में उपलब्धियों का बाल रहा है । विद्यालय-संगम, कार्यानुभव, मेतकूद-प्रतियोगिताएँ, मोरु-मानियामेष्ट, धर्मदान, जन-सहयोग, मेले, बाल-अमारोट, समाज-सेवा आदि में आपकी प्रगमनीय सेवाएँ अविस्मरणीय रहेगी ।

अभिभावकों एवं जन-समाज में आपके गम्भीर स्नेहपूर्ण रहे हैं तथा उनके माध्यम से आपने पर्याप्त जन-सहयोग प्राप्त किया है ।

श्री भगवतस्वरूप शील,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
चदवाजी (जयपुर)
आयु 43 वर्ष, सेवा 20 वर्ष



श्री शील बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं सफल अध्यापक हैं। अध्यापन व्यवसाय को आप अपने जीवन का मिशन मानते हैं।

आप अध्यापकायुगी तथा अपने विषय के आधिकारिक विद्वान हैं। बड़े श्रम में पाठ-योजनाएँ बनाने पढ़ाने हैं तथा बच्चों की हर जिज्ञासा शांत करते हैं। आप शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों में भी वर्षों तक पढ़ा चुके हैं। घनः शिक्षा, शिक्षण-विधियों, सहायक-उपकरणों एवं मूल्यांकन विधियों से सुपरिचित हैं तथा कक्षा-शिक्षण में उनका उपयोग करते हैं। आप द्वारा निर्मित कुछ शिक्षण-उपकरण जिला एवं राज्य-स्तर पर प्रदर्शित किए जा चुके हैं।

शिक्षा संबंधी कार्यशालाओं, संगोष्ठियों तथा शिविरों में आप बहुत सक्रिय रहे हैं तथा घनेक बार महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के रूप में भी कार्य कर चुके हैं।

जिस विषयों में विद्यालय में आप रहे, हर गति-विधि के केन्द्र-बिन्दु बनकर रहे। शास्त्र-गणित, वाद-विवाद, छात्र-संगद, लेख, कवि-सम्मेलन, सामान्य-ज्ञान प्रतियोगिता, छात्राधिक-सूच्यारण, कार्यकुशलता आदि नाना प्रकार की प्रवृत्तियों का कुशल संचालन किया, पुरस्कार दिए गए तथा प्रशंसा-पत्र प्राप्त किए।

श्री कानसिंह करनावट,
प्रधानाचार्य
राजकीय लखनो उच्च माध्यमिक विद्यालय
लखनऊ



आयु 51 वर्ष, सेवा 24 वर्ष

वानकों के शारीरिक, मानसिक व सवेसात्मक उन्नयन में छात्रों को रखने वाले श्री कानसिंह प्रधानाचार्य की अध्यक्षता तथा दृष्टि-नयन प्रधानाचार्य के रूप में सम्मानित है।

नियमित अध्यापन व शैक्षिक कार्य में छात्र स्वयं लगे रहते हैं तथा अध्यापकों की भी प्रेरित करने हैं। छात्र नवाचारों में भी रुचि लेते हैं तथा अब तक विभिन्न अभियानों द्वारा आभोजन दान समारोहों में भाग ले चुके हैं।

छात्रों के खेल-कूद में विद्यालय में अनेक प्रायोजनों चल रही हैं। खेलकूद, एन.सी.सी., एकाउंटेंट, एल.बी.एन., छात्र-को-छात्रों के, मादम-बनव छात्र-एन.सी.सी. प्रकल्पों की उपाययोजना संचालित की जा रही है। प्रत्येक प्रकल्प में छात्र स्वयं रुचि में काम करते हैं एवं एन.सी.सी. अध्यापकों में भी अद्भुत उत्साह देखने को मिलता है।

समाज-सेवा, समाज-शिक्षा तथा बाल-बच-सेवा में छात्रों को प्रेरित करने वाले शिक्षक तथा अध्यापकों की अतिशय शक्ति।

श्री बालूलाल जोशी,
प्रधानाचार्य,
राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय,
शाहपुरा (भीमबाडा)
आयु 51 वर्ष, सेवा 32 वर्ष



32 वर्ष के सुदीर्घ सेवाकाल में श्री जोशी ने एक छोटा विषयाध्यापक के रूप में, जो दूसरी छोटा कुशल प्रशासक के रूप में नाम बनाया है। अर्द्धशताब्दी-परिणामों के लिए आप अनेक बार सम्मानित किए जा चुके हैं।

आप बड़े मेहनती, शिष्ट तथा दृष्टि-सम्पन्न व्यक्ति हैं। विद्यालय तथा छात्रों के स्वरोन्नयन हेतु आपने कई प्रायोजनों हाथ में लीं, उन्हें पूरा किया तथा शिक्षा को लाभान्वित किया।

माधरता-प्रसार में आपकी विशेष रुचि रही। शाहपुरा में करीब 3 वर्ष तक माधरता-केन्द्रों का कुशल संचालन किया। सेलहुद प्रतियोगिताओं के आयोजनों में भी आपकी गहरी रुचि रही है।

शिक्षा सबधी मसौष्टियों तथा शिबिरों में आप अनेकतरा भाग लेते हैं, नये विचारों में आपने सहयोगियों को संलग्न करते हैं तथा नये-नये शिक्षक प्रयोग किया करते हैं।

श्री फकीरचन्द,
प्रधानाध्यापक,
राजस्थान उच्च माध्यमिक विद्यालय,
वालोतरा (वाडमेर)

आयु 49 वर्ष, सेवा 28 वर्ष



विश्व के रूप में विभिन्न अछड़े परिणाम देने वाले श्री फकीरचन्द शैक्षिक कार्यों में रुचि-विषय-ज्ञान तथा अनुशासन-प्रिय अध्यापक हैं। जन-शिक्षा आपका प्रमुख क्षेत्र रहा है। नियमित सम्पन्नमेवाओं के माध्यम से आपने अतिरिक्त समय में आपने प्रौढ़ शिक्षा की गति-विकास भी राजकीय की है।

संचालित की अधिकांश सेवाकाल चूँकि जिनके राजगढ़ गाँव में बीता है, अतः वहाँ के समाज के चूँकि आपकी सेवा में आपका योगदान अविस्मरणीय कहा जाएगा। सर्व हितकारी सभा में 4 वर्ष तक शैक्षिक उद्देश्यों के रूप में आपने पुस्तकालयों, वाचनालयों एवं साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का अत्यंत निराला किया।

संचालन विषयों में गहरी रुचि का प्रमाण इस तथ्य में मिलता है कि आप राजगढ़ के नेहरू बाल मंदिर शिक्षा में रुचि हैं। यह सभा आज नगर की प्रमुख शिक्षण सभा मानी जाती है।

वे सम्पादन-शाला में आपने साइंस ब्लॉक बनवाने के लिए 2 लाख का जन-सहयोग जुटाया है। वर्तमान विज्ञान-शाला में भी विज्ञान-प्रयोगशाला के लिए एक लाख रुपये एकत्र किए हैं।

ऐसे ही तात्पर्य, अध्ययन-तथा कुशल प्रशासक हैं। हस्तलिखित-पत्रिका तथा कार्यगोष्ठियों के आप बर्तव्य भी आपका रुझान दृष्टव्य है।

आपकी सेवा में

श्री नर्मदाशंकर उपाध्याय,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
पाटोय (बामवाड़ा)

आयु 47 वर्ष, सेवा 25 वर्ष



श्री नर्मदाशंकर राज्य के उन विरले अध्यापकों में से हैं जिन्होंने अपने लम्बे कार्यकाल के दौरान जन-प्रतिष्ठित परीक्षा-परिणाम की परम्परा को निभाया है। शैक्षिक-जागरूकता एवं प्रशासनिक कुशलता का अद्भुत सम्मिश्रण है आपके व्यक्तित्व में।

आप स्वयं पूर्व-नौबारी के साथ कक्षा लेते हैं तथा अध्यापकों को भी इसके लिए प्रेरित करते हैं। कई प्रामोन्नतों ने आपने ली हैं-परीक्षा-मुधार. प्रभावी मुपरविजन, वर्तनी-मुधार, शाला-मगम, सेवारत-प्रशिक्षण कार्यक्रम, वार्यानुभव आदि।

हिन्दी व संस्कृत साहित्य में आपको गहरी रचि है तथा एकाधिक बार आकाशवाणी से बातचीतें प्रसारित कर चुके हैं। माधुरता-प्रसार की दिशा में भी आपका योगदान अविस्मरणीय है। 'गड्डी माधुर होगा' आन्दोलन में आपकी भूमिका की अनेक अधिकारियों ने प्रभूत प्रशंसा की है।

जहाँ भी आप रहे, समुदाय ने आपकी प्रेरणा में प्रचुर मात्रा में जन सहयोग दिया। लगभग 2 लाल की राशि तथा 3 बीघा जमीन आपके प्रभाव में जुटाई गई। जनगणना कार्य में नेकाओं के लिए आप राष्ट्रपति का प्रशंसा-पत्र भी प्राप्त कर चुके हैं।

